छायावाद के सौ वर्ष

(आलेख)

लेखिका –

डॉ. कमला चौधरी
सहायक आचार्य
(हिन्दी विभाग)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)
Email: _____

सारांश(Abstract):– साहित्य अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की कड़ियों को जोड़ता है। आज जब भारत वर्ष का जनमानस नए संकल्पों के साथ 'नए भारत' की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे में समृद्ध साहित्य नई ऊर्जा देने का काम करेगा। हिन्दी साहित्य के 'आधुनिक काल' का तीसरा महत्त्वपूर्ण कालखंड सन् 1918 से 1938 तक माना जाता है, जिसे विद्वानों ने 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया।

keywords :

साहित्य अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की कड़ियों को जोड़ता है। आज जब भारत वर्ष का जनमानस नए संकल्पों के साथ 'नए भारत' की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे में समृद्ध साहित्य नई ऊर्जा देने का काम करेगा। हिन्दी साहित्य के 'आधुनिक काल' का तीसरा महत्त्वपूर्ण कालखंड सन् 1918 से 1938 तक माना जाता है, जिसे विद्वानों ने 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया।

आधुनिक हिन्दी – काव्य में छायावाद अपने काव्यगत औदात्य, मूल्यगत गरिमा तथा पद्धति सम्बन्धी वैशिष्ट्य के कारण अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान का अधिकारी है। यह अनेक विरोधों को सहता हुआ कटुतापूर्ण संघर्षों से टकराता हुआ ऐतिहासिक प्रक्रिया के फलस्वरूप प्रगति की विशिष्ट मंजिल के रूप में आया। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, पंत और महादेवी वर्मा इसके प्रतिनिधि कवि हैं।[1]

छायावाद को आधुनिक काल का पहला स्वर्ण काव्य कहते हैं। इस युग के कवियों ने समाज के सबसे नीचे पायदान पर खड़े साधारण मनुष्य को भी नए संदर्भ में समझा और उसकी ताकत को रेखांकित किया–

तुम हो महान्, तुम सदा हो महान्
है नश्वर यह दीन भाव.....
जागो फिर के बार[2]

इस दौर की कविता जहाँ खड़ी बोली की पहली उत्कृष्ट प्रस्तुति है, वहीं दूसरी ओर छायावाद में ही मुक्त छंद का हिन्दी कविता में पहली बार इस्तेमाल किया गया। इस मायने में छायावाद कविता को गद्य के नजदीक ले जाने की शुरूआती कोशिश भी है। छायावादी कारण सामूहिक मुक्ति का बयान है। देश को गुलामी से मुक्त होना है। संस्कृति को रूढ़ियों से मुक्त करना है। स्त्री पुरुषवादी वर्चस्व से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रही है। वंचित जन शोषण से मुक्त होने के लिए संघर्षरत हैं।

भाषा के धरातल पर भी रस, छंद अलंकारों की जंजीरों से छूटने की लड़ाई कवि लड़ रहे थे। कई मायनों में छायावाद प्रगतिवाद से ज्यादा प्रगतिशील और प्रयोगवाद से अधिक प्रयोगशील है। प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी ने जिस कविता को संभव किया, उसका महत्त्व आलोचनाओं के बाद में पहचाना। इस धरातल पर भी इन प्रतिभाशाली कवियों को लड़ना पड़ा। छायावाद के पक्ष में इन कवियों ने अपनी काव्य – पुस्तकों की भूमिका के रूप में या स्वतंत्र किताब की शक्ल में जो गद्य लिखा, वह अद्भुत है। वह एक प्रकार से छायावादी युग की आत्मकथात्मक जीवनी है।[3]

छायावादी कविता के मूल में स्वच्छंदतावादी चेतना है। इसका विद्रोही स्वभाव विशुद्ध भारतीय है। स्वच्छंदतावादी भावों से युक्त छायावादी कविता अपने समय और समाज की जरूरतों का रचनात्मक परिणाम है।

वर्तमान में छाई निराशा को उन्होंने अतीत के गौरवगान से दूर करने का प्रयास किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस देश का जन–सामान्य, जो जाति तथा धर्म के अलग–अलग बिंदुओं पर विभाजित था, वह अतीत की पृष्ठभूमि पर एक हो गया। इस प्रकार छायावाद के रचनाकारों ने अतीत के गौरवगान से सम्पूर्ण देश में एकता तथा राष्ट्रीयता के भाव का सूत्रपात किया।[4]

जयशंकर प्रसाद के नाटकों के नाट्यगीत अधिक स्पष्टता के साथ नए भारत के उदय का उद्घोष करते हैं– 'अरूण यह मधुमेय देश हमारा', यह वह देश है, जहाँ अनजान क्षितिज को भी सहारा मिलता है। अजान भी जहाँ स्थायी ठिकाना पा जाते हैं।

इस राष्ट्रीय जागरण का विकास उत्तर–छायावादी दौर में भी हुआ।

माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा–

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक;
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्राकुमारी चौहान आदि महत्त्वपूर्ण रचनाकारों ने इस देश की जनता में आत्मविश्वास का संचार किया। इस काल की कालजयी रचनाओं में जयशंकर प्रसाद की झरना, आँसू लहर तथा कामायनी महत्त्वपूर्ण हैं, इसके साथ–साथ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की अनामिका, परिमल, तुलसीदास, सरोज स्मृति और राम की शक्तिपूजा विशेष महत्त्व रखती हैं। इसके अतिरिक्त सुमित्रानंदन पंत, जिनकी वीणा, उच्छ्वास, ग्रंथि तथा गुंजन विशिष्ट काव्य कृति है। महादेवी वर्मा की निहार, रश्मि, नीरजा तथा संध्या गीत महत्त्वपूर्ण काव्य कृतियाँ हैं। कविता के साथ–साथ इस कालखंड में नाटकों का भी विशेष महत्त्व है, जिसमें जयशंकर प्रसाद का अजात शत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी। हरिशंकर प्रेमी का स्वर्ण विहान, रक्षाबंधन, पाताल विजय तथा प्रतिशोध। लक्ष्मीनारायण मिश्र का अशोक, सन्यासी, मुक्ति का रहस्य, सिंदूर की होली आदि।[5]

छायावाद में उपन्यास विधा का भी काफी विकास मिलता है, जिसमें उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि तथा गोदान आदि महत्त्वपूर्ण हैं, इसके अतिरिक्त इस युग में विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, चतुरसेन शास्त्री, प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा शिवपूजन सहाय, वेचन शर्मा उग्र, भगवतीचरण वर्मा आदि महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार भी सामने आए। कहानी विधा की दृष्टि से इस युग में मुशी प्रेमचंद की सैकड़ों कहानियाँ सामने आई, जिनमें पूस की रात, कफन, ईदगाह, नशा, आप बीती तथा परीक्षा महत्त्वपूर्ण हैं। जयशंकर प्रसाद का कहानी संग्रह प्रतिध्वनि, आकाशदीप तथा आँधी में विभिन्न कहानियों का संग्रह मिलता है। इसी प्रकार जैनेन्द्र कुमार की भी अनेक कहानियाँ छायावाद की पृष्ठभूमि में लिखी गई। निबन्ध साहित्य की दृष्टि से आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, शिवपूजन सहाय, बेचन शर्मा उग्र तथा गुलाब राय आदि ने अनेक महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखे।[6]

छायावाद की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह भी कही जा सकती है कि इस काल में कविता, उपन्यास, कहानी और निबन्ध आदि के साथ–साथ जीवनी साहित्य आत्मकथा, यात्रा–वृत्तांत, संस्मरण, रेखाचित्र आदि का भी एक विपुल भंडार मिलता है। छायावाद के रचनाकारों के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वे क्रान्तिकारी, समाज–सुधारक तभी साहित्यकार के साथ–साथ पत्रकार के रूप में भी विख्यात हुए। उस युग की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में चाँद, प्रभा, माधुरी, सुधा, कल्याण, आदर्श साहित्य संदेश वय, मतवाला, जागरण, भारत, कर्मवीर, देश, हिंदू पंच, श्रीकृष्ण संदेश, हिन्दी नवजीवन, आज तथा कोलकता समाचार आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

छायावाद को संकल्पना के मूल में मुकुटधर पांडे द्वारा लिखित श्री शारदा पत्रिका में छापे 'हिन्दी में छायावाद' निबन्धों का विशेष महत्त्व है। वे लिखते हैं ''छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गो, अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।''

छायावाद को विपुल साहित्य राशि का अवलोकन और विश्लेषण करने के उपरांत हम पाते हैं कि यह पूरा कालखंड साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस काल मे प्रकृति चित्रण, नारी की नए रूप में प्रतिष्ठा, विज्ञान का प्रसार, अतीत का गौरवगान आदि अनेक प्रयासों से भारत के लिए अस्मिता की खोज करने का प्रयास किया गया।

यह देश अपनी परम्पराओं में कभी भी हीन नहीं रहा, लेकिन ब्रिटिश शासन ने इस देश के जनमानस में हीनता के बीज गहरे डाल दिए थे, हिन्दी साहित्य के इस महत्त्वपूर्ण काल में उस खोई हुई अस्मिता को गौरवशाली अतीत के माध्यम से पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया। अनेक विद्वानों का मानना है कि 1857 के बाद भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। जब हम विचार करते हैं तो पाते हैं कि इस कालखंड में, यानि 1857 के बाद उपजा आधुनिकीकरण का यह दौर विदेशी शासन के प्रभाव से अधिक प्रभावित है, किंतु आज जब हम वर्ष 2020 में 'नए भारत' अथवा 'न्यू इंडिया' की संकल्पना के स्वर मुखर होते पाते हैं तो हम देखत हैं कि यह नया भारत वर्तमान परिस्थितियों में उपजा है। जैसे 1857 के बाद जनमानस की सक्रिय भागीदारी का आह्वान, विचार तथा चिंतन प्रस्तुत किया गया और उसके जागरण की बात को महत्त्व दिया गया, उसी प्रकार आज पुनः जन भागीदारी के द्वारा नए भारत के निर्माण की संकल्पना उभरकर सामने आई है। विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत ने अपनी नई पहचान स्थापित की है, जिसके मूल में जन–जागृति अथवा भागीदारी ही कही जा सकती है। आज जब 'छायावाद' के 100 वर्ष पूरे हो चुके हैं तो आवश्यकता है उस महत्त्वपूर्ण तथा समृद्ध साहित्य के विवेचन–विश्लेषण करने की। क्योंकि इस साहित्य में मानव जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदेश है, जिसमें वसुधैव कुटुंबकम् तथा बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का भाव भी निहित है। आज जब 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना तथा भावना की आवश्यकता महसूस की जा रही है, ऐसे में छायावाद की रचनाएँ अथवा छायावाद का चिंतन बहुत महत्त्वपूर्ण तथा प्रासंगिक है।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. भूमिका, क्रान्तिकारी कवि निराला – बच्चन सिंह पृ. 7
[2]. क्रान्तिकारी कवि निराला – बच्चन सिंह पृ. 25
[3]. छायावाद की प्रासंगिकता – रमेशचंद शाह, पृ. 69
[4]. छायावाद – नामवर सिंह, पृ. 51
[5]. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र, पृ. 553
[6]. छायावाद की प्रासंगिकता – रमेशचंद्र शाह, पृ. 117

----------00--------